

| Nr. | Überschrift des Lesestüdes | Verfasser | Seite |
|-------|--|--------------------------------------|------------|
| 182. | Das Handwerk in Inschriften und Sprüchen | Räller und Bohraße. | 312 |
| 183. | Vom Handwerk einst und jetzt | W. Murtfeld. | 312 |
| 184. | Der Schneider von Ulm | Max v. Eyth. | 315 |
| 185. | Die drei Stände | Nach Züttings Lesebuch. Brentano. | 324 324 |
| 186. | Der güldene Ring | Scherenberg. | 325 |
| 187. | Handwerk ehrt, Handwerk nährt | Karl Rode. | 330 |
| 188. | Von einer Schraube | Karl Storch. | 332 |
| *189. | Arbeitergruß | Ferdinand v. Saar. | 333 |
| 190. | Der Rangstreit der Tiere | Goth. Ephraim Lessing. | 334 |
| 191. | Der Dorfschmied | Fritz Lienhard. | 337 |
| 192. | Zimmererspruch | Ludwig Uhland. | 337 |
| *193. | Sinaus in die Ferne. | Max v. Eyth. | 338 |
| 194. | O Wandern, o Wandern | Heinrich Scharrolmann. | 343 |
| 195. | Der Unterfügungswohnsitz | H. Ebrecht. | 346 |
| 196. | Die Herberge zur Heimat | H. Ebrecht. | 348 |
| *197. | Der frohe Wandersmann | v. Eichendorff. | 348 |
| *198. | Der Birkin Töchterlein | Uhland. | 349 |
| 199. | Die kurze Wanderschaft | Karl Stöber. | 353 |
| *200. | Wenn du noch eine Heimat hast | Alb. Träger. | 353 |
| *201. | Wanderlied | Justinus Kerner. | 354 |
| *202. | Heidenacht | Hermann Almers. | 354 |
| 203. | Die Erfindung der Buchdruckerkunst | Albert Richter. | 357 |
| 204. | Graf Zeppelin | Nach Stögners Lesebuch. | 359 |
| 205. | Des Schieferdeckers Reich | Otto Ludwig. | 361 |
| 206. | Alfred Krupp | W. Murtfeld. | 366 |
| 207. | Die Glieder | Joachim Heinrich Campe. | 367 |
| 208. | In der Bleistiftfabrik | Räller. | 369 |
| 209. | Ein Blick in die Unendlichkeit | Fritz Gansberg. | 369 |